North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827 Vol. 6, Issue- 8 August-2020

IRJIF I.F. : 5.010

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2020.00009.9 Citation Index

A Peer Reviewed Refereed Journal

भारत के प्राचीन आर्थिक जीवन में श्रेणियों एवं शिल्पियों का योगदान

– शोधार्थी

डॉ. मंजू यादव (रिसर्च फैलो)

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ

1, उदयन मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

भारत में प्राचीन काल से ही आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि रहा है। कृषि संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी हमें वराहमिहिर एवं कालिदास की कृतियों से प्राप्त होती है। पूर्व काल से ही मनुष्य के आर्थिक जीवन में कृषि, पशुपालन एवं व्यापार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यद्यपि यहाँ की उर्वर भूमि, उपयुक्त जलवायु एवं प्राकृतिक साधनों के कारण बहुत अधिक पैदावार होती रही है, तथापि खनिज पदार्थों की भी यहाँ कमी नही थी। मालवा क्षेत्र के लोग परिश्रमी और साहसी थे, जिन्होंने अनेक व्यवसाय और उद्योग धंधे आरम्भ किए। मालवा क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से वैभव और सम्पन्नता का काल था। इस काल में उद्योग और व्यवसाय अपने चरमोत्कर्ष पर थे।

साहित्यिक एवं अभिलेखिक साक्ष्यों से विदित होता है कि प्राचीन कालीन मालवा में विभिन्न प्रकार के उद्योग धंधे और शिल्प कला प्रचलित थी। अन्य ग्रन्थों के अनुसार कृषि, सुवर्णकारों तथा अन्य शिल्पियों के धातु–कर्म, तन्तुवाय–कर्म, वस्त्र उद्योग, वाणिज्य, सैनिक कर्म, नृत्य–गीत, व्याघवृत्ति, गृह–शिल्प, खनन कर्म आदि यहाँ के मुख्य व्यवसाय थे।

प्राचीन काल में शिल्पियों एवं व्यापारियों ने अपनी सुरक्षा तथा व्यापारिक उन्नति के लिए अपने–अपने संगठन बनाये। ऐसे संघटित व्यापारिक समूह को श्रेणी, पूग तथा निगम का नाम दिया गया। एक ही नगर अथवा ग्राम में निवास करने वाले विभिन्न जाति के लोगों के वर्ग को 'पूग' कहा गया।

इस प्रकार 'श्रेणि' अथवा 'पूग' संस्थायें जाति–पाति और ऊँच–नीच के बंधन से मुक्त होकर एक ही ग्राम अथवा नगर में निवास करती थी तथा अपने हितों की सुरक्षा स्वयं करती थी। श्रेणि समाज में विभिन्न जातियाँ होती थी परन्तु समान व्यापार और उद्योग अपनाने वाले लोगों का ही संगठन होता था। कई विद्वानों ने केवल शिल्पियों के समूह को ही श्रेणी माना। किन्तु साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर श्रेणि व्यापारियों तथा शिल्पियों दोनों का ही संगठन महत्वपूर्ण था।

इसी प्रकार उद्योग और वाणिज्य से संबंधित लोगों का एक अन्य संगठन निगम था। इसमें किसी एक व्यवसाय के लोगों का संघटन न होकर अनेक व्यवसायों का समूह के संगठन को निगम कहते थे। इसमें मुख्य रूप से तीन वर्ग सम्मिलित थे। उद्योग का काम करने वालों का पहला वर्ग निगम था, जो 'कुलिक' कहे जाते थे। दूसरा निगम देश–विदेश से माल लाने वाले 'सार्थवाह' लोगों का समूह और तीसरा निगम 'श्रेष्ठि' लोगों का था, जो संभवतः एक स्थान पर अपनी दुकान खोलकर स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

जिस प्रकार शिल्पी श्रेणी में संगठित होकर अपने संबंधित विषयों पर कानून बनाते थे ओर शिल्प को नियंत्रित करते थे। उसी प्रकार निगम में संगठित व्यापारी अपने व्यापार के संबंध में व्यवस्था करते थे।

व्यावसायिकों के श्रेणीबद्ध होने के दो कारण बताये हैं – (1) चोर डाकुओं तथा अन्य मानवीय आपत्तियों से सुरक्षा (2) सामूहिक। जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में 18 श्रेणियों का उल्लेख मिलता है – (1) कुम्हार, (2) रेशम बुनने वाले (पट्टइल्ला) (3) सुनार (सवर्णकार), (4) रसोइया (सूवकार), (5) गायक (गन्धब्ब), (6) नाई (कासवग), (7) मालाकार (8) कच्छकार (काछी), (9) तमोली, (10) मोची (चम्मपरू), (11) तेली (जन्तपीलग), (12) अंगोछे बेचने वाले (गंछ), (13) कपड़ा छापने वाले (छिम्प, रंगरेज), (14) ठठेरे (केंसकार), (15) दर्जी (सीवग), (16) ग्वाले (गुमार), (17) शिकारी (भिल्ल), (18) मछुआरे।

प्राचीन काल में श्रेणियों का लोकतांत्रिक आधार पर विकास हुआ तथा धीरे–धीरे उनका अपना संविधान निर्मित हुआ, जिसके आधार पर वे अपना कार्य करते थे। बौद्ध साहित्यों के अनुसार श्रेणी संगठनों का प्रमुख सेट्ठि (श्रेष्ठि) अपने समुदाय और राज्य के लिए अनेक कार्य करता था। श्रेणी संगठन की एक प्रबंधकारी समिति होती थी, जिसकी सहायता के लिए दो तीन या पाँच सदस्य होते थे। उस समिति का एक प्रधान या अध्यक्ष होता था।

संगठन के सदस्यों में फूट डालने वाले को दण्ड देने की व्यवस्था की गयी थी। यद्यपि श्रेणि संगठनों को अपने कार्यों में पर्याप्त स्वतंत्रता थी, किन्तु उनमें आपस में मतभेद होने पर राजा को हस्तक्षेप करने तथा उन्हें अपने धर्म में स्थापित करने का अधिकार प्राप्त था।

मालवा की कुछ श्रेणियों तथा उनके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख हमें तत्कालीन अभिलेखों से प्राप्त होता है। कुमारगुप्त और बंधुवर्मा के मंदसौर प्रस्तर अभिलेख में कहा गया है कि लाट में बसे हुए पट्टवादों की एक श्रेणी दशपुर नगर के राजा के गुणों से आकर्षित होकर वहाँ जाकर बस गयी थी। वहाँ जाकर उनमें से अनेक भिन्न–भिन्न व्यवसायों में लग गये। कुछ धनुर्विद्या सीखकर अच्छे योद्धा बन गये और कुछ धार्मिक जीवन अपना कर धर्म संबंधी विषयों पर प्रवचन करने लगे। इसी प्रकार अनेक अन्य व्यवसायों का अनुसरण किया, किन्तु उनमें से अधिकांश रेशम बुनने के वंशानुगत धन्धे में लगे रहे। अतः दशपुर को पश्चिमी मालवा का एक स्वतंत्र एवं समृद्ध श्रेणी के रूप में संगठित किया। मालवा की इस श्रेणी ने अपनी व्यवसायिक व्यवस्था के साथ–साथ अन्य सार्वजनिक कार्य में भी योगदान दिया। मंदसौर प्रस्तर अभिलेख के अनुसार तंतुवाय श्रेणी दशपुर में फूली–फली और 436 ई. में इस श्रेणी ने अपी संचित धनराशि से सूर्य का विशाल मंदिर बनवाया। इस मंदिर की पुनः मरम्मत इस श्रेणी ने 472 ई. में पुनः करवायी।

उसी अभिलेख में उनके सैन्यकर्म का भी उल्लेख मिलता है, जो अपने समाज के सदस्यों के धन, जन और वणिज की रक्षा करते थे। संभवतः इस प्रकार के लोग सार्थ के रक्षार्थ साथ जाते रहे होंगे।

अतः इस प्रकार मालवा में श्रेणी वर्ग में केवल कलाओं और शिल्पों के उत्कर्ष में ही अपना महत्वपूर्ण योगदान नही दिया अपितु देश के विधान द्वारा प्रदत्त स्वायत्त शासन तथा स्वतंत्रता के फलस्वरूप शक्ति का केन्द्र बनकर तथा उदार संस्कृति और प्रगति में उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत की है। इसी के साथ समाज को शक्ति और गौरव प्रदान किया।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. पाणिनि कालीन भारत, पृ. 230.
2. आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, 1903–04, पृ. 101.
3. डॉ. मोतीचन्द, द्रष्टव्य है, सार्थवाह, पृ. 180.
4. बृहस्पति स्मृति, 17/19.
5. नारद स्मृति, 10/2, 3.
6. जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ. 618.